खयाल गायन का जयपुर घराना

-पंडित विजय शंकर मिश्र

खयाल गायन के जयपुर घराने का नाम भले ही जयपुर घराना है, किंतु इसके आविष्कार, विकास और विस्तार में राजस्थान के साथ-साथ दो अन्य प्रदेशों-उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की भी अहम् भूमिका रही है। इस घराने के मूल पुरुष और प्रणेता उ. अल्लादिया खां मूलत: उत्तर प्रदेश के अतरौली (अलीगढ़ के पास) नामक स्थान के रहने वाले थे। लेकिन, इस घराने की नींव उन्होंने जयपुर राजदरबार में रहने के दौरान डाली थी। इसलिए अपने आविष्कार को उन्होंने अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों से जोड़ते हुए अतरौली-जयपुर या जयपुर-अतरौली घराने का नाम दिया। लेकिन, यहीं यह भी उल्लेखनीय है कि इस घराने का, इस गायन शैली का विधिवत् विकास उ. अल्लादिया खां के महाराष्ट्र में जाने के बाद हुआ। इनका जुड़ाव उ. बहराम खां ध्रुवपदिये और उ. वजीर खां बीनकार के साथ भी खूब रहा।

उ. अल्लादिया खां (1855-1946) का पूरा नाम गुलाम अहमद अल्लादिया खां था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के अतरौली गांव में महान् संगीतज्ञों के परिवार में हुआ था। इन्हें अपने पिता ख्वाजा अहमद खां एवं चाचा जहांगीर खां से ध्रुवपद और खयाल दोनों गायन शैलियों की उच्चस्तरीय शिक्षा मिली थी। साथ ही रमजान खां 'रंगीले' और मेहबूब खां 'दरसपिया' का सान्निध्य और मार्गदर्शन भी इन्हें मिला था। अल्लादिया खां ने जिस नवीन गायन शैली को विकसित किया, उसमें ध्रुवपद, धमार और तराना की सूक्ष्म विशेषताओं को खयाल अंग की गायकी में परिणत किया था। इनके पूर्वज मुख्यत: डागुर वाणी का ध्रुवपद ही गाते थे। इस परम्परा में ठुमरी गायन का प्रचलन नही के बराबर था। अब, जरूर कुछ गायक ठुमरी भी गाने लगे हैं।

जयपुर घराने के कलाकारों की रुचि अप्रचलित रागों के गायन में विशेष रूप से रही है। साथ ही, मिश्र रागों का प्रचलन भी इस परम्परा में खूब रहा है। हिंडोल, मालश्री, मारवा, बसंत बहार, भैरव बहार, मारुबिहाग, नायकी कान्हड़ा, गोरख कल्याण, खटतोड़ी, ललित मंगल और जयंत मल्हार जैसे रागों को गाने में खां साहब उ. अल्लादिया खां की अधिक रुचि रहती थी। चूंकि जयपुर घराने की खयाल गायकी के मूल में ध्रुवपद गायन रहा है, इसलिये इस घराने में ध्रुवपद अंग की बंदिशें भी गाई गई हैं। देव देव सत्संग (सावनी कल्याण), आदि दाता अनंत (मालकौंस) अनहत आदि नाद (सावनी नट), देवता आदि सब (कुकुभ बिलावल) और देवी दुर्गे (शुक्ल बिलावल) जैसी रचनाओं और रागों को सुनने के लिये जयपुर घराने की शरण में ही जाना पड़ता है।

उ. अल्लादिया खां ने जयपुर घराने के नाम से जिस

उ. अल्लादिया खां

नवीन गायन शैली को विकसित किया उसमें ध्रुवपद अंग के आलाप के साथ-साथ गमक, मींड़, स्वर कम्पन और गले की विशिष्ट हरकतों पर विशेष बल दिया। इन्हें जयपुर, और उदयपुर सहित कई राजाओं का संरक्षण प्राप्त था।

बाद में वे स्थायी रूप से कोल्हापुर में बस गये। वहां के राजा छत्रपति शाहू जी महाराज इनके गायन के अनन्य प्रशंसक थे। उन्होंने उस्ताद अल्लादिया खां को इतना मान-सम्मान और प्रेम दिया कि जयपुर अतरौली घराने के प्रवर्तक उस्ताद अल्लादिया खां-अल्लादिया खां कोल्हापुर वाले के नाम से संगीत जगत में प्रसिद्ध हो गये। इनका निधन 16 मार्च, 1946 को कोल्हापुर में ही हुआ। कोल्हापुर में गर्व से सिर उठाकर खड़ी उ. अल्लादिया खां की प्रतिमा आज भी यह बताने में सक्षम है कि अल्लादिया खां किस आला दर्जे के गवैये थे।

उ. अल्लादिया खां द्वारा स्थापित अतरौली-जयपुर घराने की गायकी को महाराष्ट्र में आशातीत सफलता मिली और विदुषी केसरबाई केरकर, गायनाचार्य भास्कर बुवा बखले, गोविंद राव टेम्बे, विदुषी मोघु बाई कुर्डीकर, विदुषी ढोंडूताई कुलकर्णी तथा खां साहब के सुपुत्र उ. मंजी खां और उ. भुर्जी खां साहब जैसे अनेक उल्लेखनीय संगीतज्ञ सामने आये। भुर्जी खां के शिष्य पं. मल्लिकार्जुन मंसूर और मोघुबाई कुर्डीकर की पुत्री तथा शिष्या गान सरस्वती विदुषी किशोरी अमोनकर किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

13 जुलाई, 1892 को गोवा में जन्मी 'सुरश्री' केसर बाई ने यूं तो उ. अब्दुल करीम खां, उ. बरकतुल्ला खां (सितार वादक), पं. भास्कर बुवा और पं. रामकृष्ण बझे बुवा जैसे गुरुओं से भी थोड़ा बहुत संगीत सीखा था। लेकिन अलग-अलग कारणों से इन गुरुओं के सान्निध्य में उनकी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं चल पाई। अंतत: बहुत परिश्रम करके उन्होंने उ. अल्लादिया खां को मनाया सिखाने के लिये। उ. अल्लादिया खां ने शिक्षा प्रदान करने के लिये कई कठिन शर्तें रख दी थीं, जिन्हें केसर बाई ने सहर्ष स्वीकर कर लिया था। उ. अल्लादिया खां ने इन्हें 12 वर्षों तक 9 घंटे प्रतिदिन संगीत सिखाया था। निर्दोष और खुली हुई आवाज तथा उसे आवश्यकता के अनुसार ऊंचाई-निचाई पर बारीक और मोटी करते हुए मंद्र पंचम् से तार पंचम् तक आसानी से ले जाने के लिये इनकी विशेष ख्याति थी। वे वृद्धावस्था में भी अपनी स्पष्ट, दानेदार और गमक युक्त तानों से लोगों को प्रभावित कर लेती थीं। उनके कंठ से निनादित बसंत बहार, तोड़ी, मियां मल्हार, हेमनट और सावनी कल्याण जैसे रागों को जिन लोगों ने सुना उसे आजीवन विस्मृत नहीं कर पाये। इनके अनेक ग्रामोफोन रेकार्ड भी बने। कोलकाता के संगीत रसिकों ने केसर बाई को 'सुरश्री'